EM-II -आ.हिंदी कविता

डॉ.जशाभाई आपका स्वागत करता है।

त्रिलोचन

युनिट-2

I. चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चिन्हती
II. उस जन पद का कवि हूँ
III. पश्यन्ती
IV. धूप सुन्दर है
V. आरर-डाल
VI. बिस्तरा है न चार पाई है

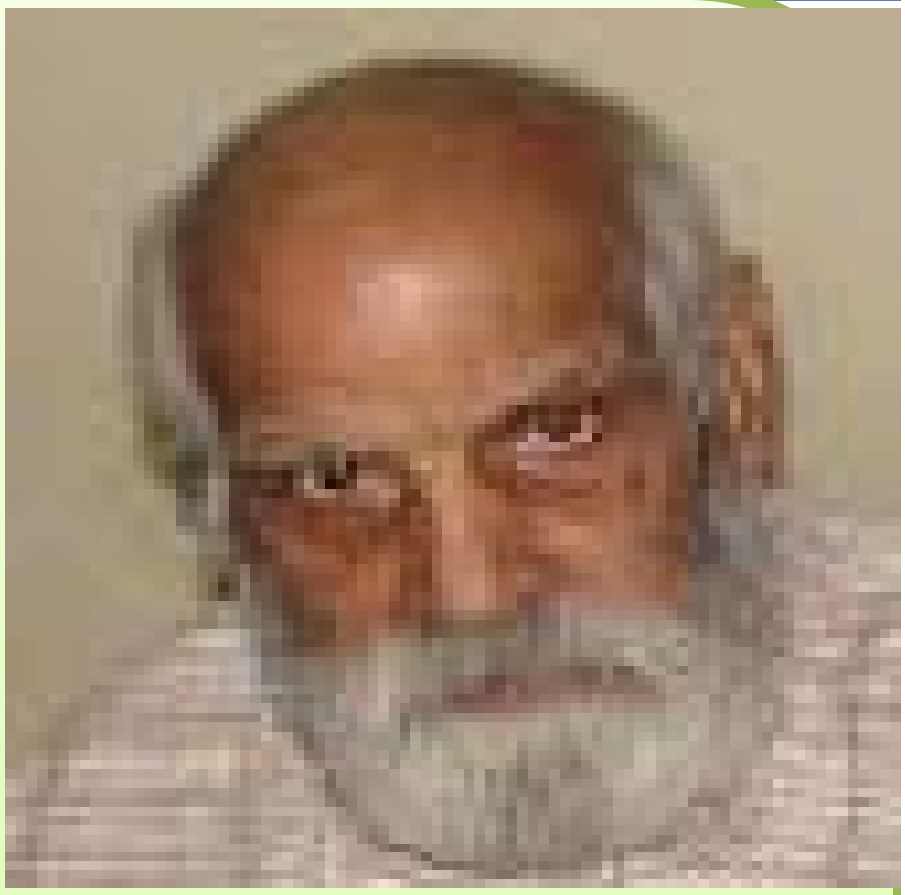

त्रिलोचन

त्रिलोचन

जन्म: 20 अगस्त 1917 **निधन:** 09 दिसम्बर 2007
उपनाम त्रिलोचन **जन्म स्थान** चिरानीपट्टी, कटघरा पट्टी, जिला सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
कुछ प्रमुख कृतियाँधरती (1945),गुलाब और बुलबुल(1956) दिगंत (1957), ताप के ताये हुए दिन (1980), शब्द (1980), उस जनपद का कवि हूँ (1981), अरघान(1984), तुम्हे सौंपता हूँ (1985), चैती (1987)
त्रिलोचन जी का मूल नाम वासुदेव
हिंदी सॉनेट का साधक माना जाता है।
कविता संग्रह **ताप के ताये हुए दिन** के लिए 1981 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।
शलाका सम्मान सहित अनेकों अन्यप्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार से विभूषित।

त्रिलोचन-चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चिन्हती

चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है:
इन काले चिन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं

चम्पा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला है : गाय भैंसे रखता है
चम्पा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है

त्रिलोचन-चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चिन्हती

चम्पा अच्छी है
चंचल है
नटखट भी है
कभी कभी ऊधम करेती है
कभी कभी वह कलम चुरा देती है
जैसे तैसे उसे ढूंढ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ - अब कागज गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ

त्रिलोचन-चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चिन्हती

चम्पा कहती है:
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चम्पा चुप हो जाती है

उस दिन चम्पा आई , मैने कहा कि
चम्पा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गांधी बाबा की इच्छा है -
सब जन पढ़ना लिखना सीखें
चम्पा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ुंगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ुंगी

त्रिलोचन-चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चिन्हती

मैंने कहा चम्पा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा , तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम सँग साथ रह चला जायेगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे सँदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चम्पा पढ़ लेना अच्छा है!

चम्पा बोली : तुम कितने झूठे हो , देखा ,
हाय राम , तुम पढ़-लिख कर इतने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करुंगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग साथ रखूंगी
कलकत्ता में कभी न जाने दुंगी
कलकती पर बजर गिरे।

उस जनपद का कवि हूँ

- उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा दुखा है,
नंगा है, अनजान है, कला--नहीं जानता
कैसी होती है क्या है, वह नहीं मानता
कविता कुछ भी दे सकती है। कब सूखा है
उसके जीवन का सोता, इतिहास ही बता
सकता है। वह उदासीन बिलकुल अपने से,
अपने समाज से है; दुनिया को सपने से
अलग नहीं मानता, उसे कुछ भी नहीं पता
दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँची; अब समाज में
वे विचार रह गये नहीं हैं जिन को ढोता
चला जा रहा है वह, अपने आँसू बोता
विफल मनोरथ होने पर अथवा अकाज में।
धरम कमाता है वह तुलसीकृत रामायण
सुन पढ़ कर, जपता है नारायण नारायण।

आरर-डाल / त्रिलोचन

सचमुच, इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ। पूरे दिन मशीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना।

इस उस पर मन दौड़ाना। फिर उठ कर रोटी
करना। कभी नमक से कभी साग से खाना।
आरर डाल नौकरी है। यह बिल्कुल खोटी
है। इसका कुछ ठीक नहीं है आना-जाना।

आए दिन की बात है। वहाँ टोटा-टोटा
छोड़ और क्या था। किस दिन क्या बेचा-कीना।
कमी अपार कमी का ही था अपना कोटा,
नित्य कुँआ खोदना तब कहीं पानी पीना।

धीरज धरो आज कल करते तब आऊँगा,
जब देखूँगा अपने पुर कुछ कर पाऊँगा।

बिस्तरा है न चारपाई है / त्रिलोचन

बिस्तरा है न चारपाई है,
जिन्दगी खूब हमने पायी है।

कल अंधेरे में जिसने सर काटा,
नाम मत लो हमारा भाई है।

ठोकरें दर-ब-दर की थी हम थे,
कम नहीं हमने मुँह की खाई है।

कब तलक तीर वे नहीं छूते,
अब इसी बात पर लड़ाई है।

आदमी जी रहा है मरने को
सबसे ऊपर यही सचाई है।

कच्चे ही हो अभी त्रिलोचन तुम
धुन कहाँ वह सँभल के आई है।